पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त का शैक्षिक निहितार्थ →

वर्तमान समय में शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने जीन पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त को शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। पियाजे का सिद्धान्त बच्चों का शैक्षिक दृष्टिकोण मनो मानसिक परिपक्वता के साथ एक चरण से दूसरे चरण में बदलता है और अंततः बच्चा एक व्यापक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण कर लेता है। पियाजे की शैक्षिक सिद्धान्त की उपयोगिता को इस प्रकार समझा जा सकता है।

1. पियाजे ने शिक्षार्थी अर्थात बालक की भूमिका को काफी सक्रिय और महत्वपूर्ण माना है। पियाजे के अनुसार शिक्षकों को पाठ्यक्रम बनाते समय बालक की आयु, शारीरिक क्षमता, motivation, और उनकी अभिरुचि को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए।

2. पियाजे का सिद्धान्त स्पष्टतः यह बताता है कि बालकों के अन्दर Animism या जीववाद या ego centrism ~~अहंकेन्द्रित~~ आत्मकेन्द्रिता की भावना पाई जाती है। इन भावनाओं के द्वारा शिक्षक बालकों को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर करें।

iii) पियाजे का सिद्धान्त यह भी बताता है कि Concrete operational stage में बालकों के अन्दर Conservation, relation, classification, subjectivity, reversibility की समझ आ जाती है यदि इस अवस्था में शिक्षक learner के लिए अधिक सहायक हो जाते हैं तो ~~उनके~~ बच्चों की बौद्धिक क्षमता का स्तर और अधिक बढ़ जाता है और तब learner एक innovative के रूप में, एक creative के रूप में, एक discoverer के रूप में अपनी पहचान बनाता है।

iv) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से यह भी पता चलता है कि जब बच्चा Formal operational stage में आ जाता है तब शिक्षक के स्तर और व्यवहार से वह पूरा प्रभावित होता है और इस स्थिति में उसके चिन्तन की योग्यता, तार्किक शक्ति की योग्यता, संज्ञानात्मक विकास की परिपक्वता, कुछ नया निष्कर्ष निकालने की योग्यता, परिकल्पना की योग्यता, वैज्ञानिकता की योग्यता को काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है।

(vi) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है की शिक्षक और शिक्षार्थी की अन्तःक्रिया इस प्रकार हो की शिक्षार्थी के कौशल को पूरी तरह बढ़ावा मिले वह शिक्षक पर पूरी तरह निर्भर हो कर आत्मकेन्द्रित हो एवं उसके अन्दर Self confidence, प्रभावशाली व्यक्तित्व, जिज्ञासु स्वभाव का विकास बन सके।

(vii) पियाजे ने अपने सिद्धान्त में खेलों की भूमिका को भी अहम माना है पियाजे का यह मानना है कि खेलों के द्वारा learner के बौद्धिक स्तर को भी परिपक्वता मिलती है इस प्रकार हम देखते है कि पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्तों की शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।